Chaar Buraiyan (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 460
Weekly Booklet : 460

अमीरे अहले सुन्नत का तक़रीबन 38 साल पहले (1988) का बयान

चार बुराइयां

सफ़ह़ात : 18

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

चार बुराइयां(1)

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 18 सफ़्हात का रिसाला "चार बुराइयां" पढ़ या सुन ले उसे तमाम बुराइयों और मोहलिक बीमारियों से मह़फ़ूज़ फ़रमा कर मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

एक बुज़ुर्ग जंगल में सफ़र कर रहे थे कि रात हो गई, हर त़रफ़ ख़ौफ़नाक दरिन्दे दन्दनाते फिर रहे थे, इन्हें ख़ौफ़ मह़सूस हुवा तो अचानक येह ह़दीसे पाक याद आई "जो एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह पाक उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (مسلم، ص172، حدیث:912)" उन्हों ने दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया और एक जगह सो गए, सारी रात सुकून से गुज़ारी और किसी दरिन्दे ने उन को छुवा तक नहीं। फिर (इसी ह़दीस के मुतअ़ल्लिक़) उन्हों ने फ़रमाया : मैं ने इस लिए दुरूद शरीफ़ पढ़ा था क्यूंकि एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर अल्लाह पाक की दस रह़मतें नाज़िल होती हैं और जब मुझे अल्लाह पाक की दस रह़मतें घेर लेंगी तो भला किस दरिन्दे की मजाल है कि वोह मेरी त़रफ़ आंख उठा कर भी देखे ! (سعادۃ الدارین، ص152 ملخصاً)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

---

1 … येह बयान शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دامت برکاتہم العالیہ ने 14 रबीउ़स्सानी 1409 हि. ब मुत़ाबिक़ 24 नवम्बर 1988 ई. को दावते इस्लामी के मदनी मर्कज़ जामेअ़ मस्जिद गुल्ज़ारे ह़बीब में आ़शिक़ाने रसूल के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में फ़रमाया था। जिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शोबे "बयानाते अमीरे अहले सुन्नत" ने मुरत्तब किया है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह सब ईमान की पुख़्तगी पर मुन्हसिर होता है। आप ने उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ईमान की पुख़्तगी मुलाहज़ा फ़रमाई जबकि हमारी ह़ालत येह है कि हम اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! मोमिन तो हैं लेकिन हमारी तवज्जोह ज़ाहिरी अस्बाब की त़रफ़ ज़ियादा होती है। अल्लाह पाक हमारा ईमान भी पुख़्ता फ़रमाए।

اٰمین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

चार परिन्दे और ख़ुदा की क़ुदरत

ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने समुन्दर के किनारे एक लाश देखी। सूरते ह़ाल येह थी कि जब पानी आता तो उस वक़्त मछलियां आ जातीं और उस लाश को खातीं, जब पानी उतर जाता तो दरिन्दे उस लाश को खाते और जब दरिन्दे खा कर चले जाते तो परिन्दे चोंचें मार कर खाते। येह मन्ज़र देख कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अल्लाह पाक की बारगाह में अ़र्ज़ की : ऐ अल्लाह ! बेशक तू क़ादिर है और मुझे यक़ीन है तू मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा लेकिन मुझे तजस्सुस हो रहा है कि काश ! मैं येह मन्ज़र अपनी आंखों से देख सकूं कि तू क़ियामत के दिन किस त़रह़ इस इन्सान को इकट्ठा करेगा जिस के जिस्म से कुछ ह़िस्से मछलियों के पेट में, कुछ दरिन्दों के पेट में और कुछ परिन्दों के पोटों में चले गए। अल्लाह पाक ने ह़ुक्म दिया : ऐ इब्राहीम ! तुम चार परिन्दे पालो और उन को ख़ूब मानूस कर लो, जब अच्छी त़रह़ मानूस हो जाएं तो उन को ज़ब्ह़ कर दो, ज़ब्ह़ करने के बाद उन के सर अपने पास रख लो और गोश्त का क़ीमा बना कर उसे इर्द गिर्द के मुख़्तलिफ़ पहाड़ों पर थोड़ा थोड़ा रख आओ और उन को पुकारो फिर हम तुम्हें अपनी क़ुदरत का करिश्मा दिखाएंगे।

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने ब ह़ुक्मे ख़ुदावन्दी चार परिन्दे मोर, मुर्ग़ा, कबूतर और गिध पाले। जब वोह अच्छी त़रह़ मानूस हो गए तो आप ने उन चारों को ज़ब्ह़ कर के उन के सर अपने पास रख लिए और गोश्त का क़ीमा बनाने के बाद मुख़्तलिफ़

पहाड़ों पर थोड़ा थोड़ा रख दिया। इस के बाद आप عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को पुकारा कि अल्लाह पाक के हुक्म से मेरे पास आओ, आप के पुकारते ही चारों परिन्दों का क़ीमा इकट्ठा होना शुरूअ़ हो गया, हड्डियां एक दूसरे से जुड़ने लगीं और देखते ही देखते चारों परिन्दे तय्यार हो गए फिर वोह चारों दौड़ते हुए अपने अपने सरों के साथ आ कर जुड़ गए। ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब येह रूह़ परवर मन्ज़र देखा तो आप के दिल को इत्मीनान और क़रार ह़ासिल हो गया।

(تفسیر جمل، پ3، البقرۃ، تحت الآیۃ:260، 1/329 مفہوماً)

इस पूरे मज़्मून को अल्लाह पाक ने पारह 3 सूरए बक़रह की आयत नम्बर 260 में इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ تُحْیِ الْمَوْتٰىؕ قَالَ اَوَ لَمْ تُؤْمِنْؕ قَالَ بَلٰى وَ لٰكِنْ لِّیَطْمَىٕنَّ قَلْبِیْؕ قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًاؕ وَ اعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ(۲۶۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब अ़र्ज़ की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा फ़रमाया क्या तुझे यक़ीन नहीं अ़र्ज़ की यक़ीन क्यूं नहीं मगर येह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए फ़रमाया तो अच्छा चार परिन्दे ले कर अपने साथ हिला ले फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पांव से दौड़ते और जान रख कि अल्लाह ग़ालिब ह़िक्मत वाला है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अल्लाह पाक ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी क़ुदरत का कैसा अ़ज़ीमुश्शान नज़ारा दिखाया ! बेशक अल्लाह पाक की क़ुदरत कामिल है, वोह जो चाहे कर सकता है और वोह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है।

चार परिन्दों में चार बुराइयां

ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने जिन चार परिन्दों को ज़ब्ह़ किया उन चारों में एक एक बुरी ख़स्लत पाई जाती है, मसलन मोर बड़ा ह़सीन परिन्दा है, उस के पर बहुत ख़ूबसूरत होते हैं और शायद परिन्दों में सब से ज़ियादा ह़सीन भी येही है लेकिन इस में एक बुरी ख़स्लत पाई जाती है कि उसे अपने ह़ुस्नो जमाल पर बड़ा घमन्ड होता है, अल्लाह पाक ने उस का घमन्ड तोड़ने के लिए उस के पांव बदसूरत बनाए, जब येह मौज मस्ती में आ कर नाचता है और ख़ुद को बड़ा ह़सीन गुमान करता है लेकिन जैसे ही उस की नज़र अपने पांव पर पड़ती है तो ह़ुस्न का सारा नशा उतर जाता है और उस की आंखों से आंसू टपक पड़ते हैं। गिध बिल्कुल बदनाम परिन्दा है, येह मुर्दे खाता है और इस की बुरी ख़स्लत येह है कि इस में ह़िर्स व त़मा कूट कूट कर भरा होता है। मुर्ग़ में बुरी ख़स्लत येह है कि इस में शहवत ज़ियादा होती है। कबूतर में बुरी सिफ़त येह है कि इस को अपनी बुलन्द परवाज़ी पर बड़ा नाज़ होता है। ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام ने उन चारों परिन्दों को ज़ब्ह़ किया तो उन के दिल को क़रार आ गया।

आज अगर कोई मुसलमान इन चारों बुरी ख़स्लतों को ज़ब्ह़ कर दे यानी अगर किसी में ह़ुस्नो जमाल पाया जाता है और वोह इसे ख़ूब निखारता संवारता और इस पर नाज़ करता है तो वोह अपने ह़ुस्नो जमाल वाले घमन्ड को ख़त्म कर दे। अगर किसी में बेजा शहवत पाई जाती है तो वोह उस पर कन्ट्रोल ह़ासिल कर ले। अगर कोई ह़िर्स व त़मा का शिकार है और दुनिया की दौलत पर फ़रेफ़्ता है तो वोह दुनिया की लालच को दिल से निकाल दे। अगर किसी के दिल में ऊंचान यानी ओ़हदे और कुर्सी की ख़्वाहिश है तो वोह उसे ख़त्म कर दे اِنْ شَآءَاللہ उस के दिल को भी क़रार ह़ासिल हो जाएगा और उस का दिल नूर व इ़रफ़ान से लबरेज़ हो जाएगा।

(تفسیر جمل، پ3، البقرۃ، تحت الآیۃ:260، 1/327-329 مفہوماً)

बद क़िस्मती से अब येह चारों ख़स्लतें आ़म हो चुकी हैं। अगर किसी में हुस्नो जमाल पाया जाता है तो वोह सामने वाले को मुंह नहीं लगाता, अपने आप को बड़ा ह़सीनो जमील समझता और ख़ूब अकड़ कर चलता है। ऐसे लोगों को समझाने के लिए बुज़ुर्गों के बड़े प्यारे वाक़िआत मिलते हैं, आइए इस सिल्सिले में एक नसीह़त आमेज़ वाक़िआ़ पढ़िए :

अकड़ कर चलने वाले को नसीह़त

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते त़ाउस رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक शख़्स को अकड़ कर चलते हुए देखा तो फ़रमाया : येह चाल उस शख़्स की नहीं जो येह जानता हो कि उस के पेट में क्या है (यानी उस के पेट में पाख़ाना और गन्द भरा हुवा है।) (कीमियाए सआ़दत, 2/721 मुल्तक़त़न)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर कोई अपने हुस्नो जमाल पर तकब्बुर करता है तो उसे चाहिए कि अपनी तख़्लीक़ पर ग़ौर करे उस पर वाज़ेह़ हो जाएगा कि उस की तख़्लीक़ ख़ून और नुत़्फ़े से हुई है, इस त़रह़ ग़ौरो फ़िक्र करने से اِنْ شَآءَاللّٰه उस की तकब्बुर जैसी बुरी ख़स्लत ख़त्म हो जाएगी। आज कल हर एक अपनी बुलन्द परवाज़ी यानी मन्सब और ओ़हदे के पीछे दौड़ता नज़र आता है और अगर किसी को बुलन्द परवाज़ी यानी कोई बड़ा ओ़हदा या मन्सब मिल जाए तो उसे बहुत घमन्ड होने लगता है। ऐसों को उन लोगों के अन्जाम से इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिए जिन की हलाकत का बाइ़स उन का ओ़हदा और मन्सब बना। आइए ! ओ़हदे और मन्सब पर तकब्बुर करने वालों का अन्जाम मुलाह़ज़ा कीजिए, चुनान्चे

फ़िरऔ़न व नमरूद का अन्जाम

जब फ़िरऔ़न को ओ़हदा मिला तो वोह फूल गया और ख़ुदाई का दावा कर बैठा, तीन सौ साल तक अ़य्याशी करता रहा लेकिन आख़िरेकार उस का

अन्जाम येह हुवा कि वोह दरियाए नील में बड़ी ज़िल्लत के साथ डूब कर मरा। इसी त़रह़ जब नमरूद को ओ़हदा मिला तो वोह भी ख़ुदा होने का दावा कर बैठा, बिल आख़िर उसे एक मच्छर के ज़रीए़ हलाक किया गया। (الحدیقۃ الندیۃ، 1/549 ملتقطاً)

ओ़हदा वोही अच्छा है जो इस्लाम की मह़ब्बत के साथ हो

याद रखिए ! ओ़हदा वोही अच्छा है जो इस्लाम की मह़ब्बत के साथ हो जैसा कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم के पास था और वोह उसे दीने इस्लाम की तब्लीग़ और लोगों की भलाई के लिए इस्तिमाल करते थे। इसी त़रह़ हमारे बुज़ुर्गाने दीन व औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم के पास भी ओ़हदा था और ऐसा ओ़हदा कि दुनिया से पर्दा फ़रमाने के बाद आज भी वोह अपने उ़र्स के मौक़ा पर लाखों लोगों को जमा कर लेते हैं जब कि कोई बड़े से बड़ा सियासी लीडर इतने लोगों को जमा नहीं कर पाता, आज भी रोज़ाना हज़ारों लोग उन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी देते हैं और अब भी اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! लोगों के दिलों पर उन की हुकूमत जारी है। याद रहे ! आज कल दुनियावी क़ानून के एतिबार से अगर किसी को कोई ओ़हदा या मन्सब मिलता है तो वोह सिर्फ़ पांच साल के लिए होता है जब कि औलियाए किराम की हुकूमत सैंकड़ों साल गुज़र जाने के बा वुजूद आज भी जारी है और जारी रहेगी। अगर किसी पर ओ़हदे की धुन सुवार है और मक़्सद सिर्फ़ दुनिया बनाना या दौलत कमाना है तो यक़ीनन येह उस की बुरी सिफ़त है उसे चाहिए कि अपनी इस बुलन्द परवाज़ी की चाहत को ख़त्म कर दे ताकि उसे दिली सुकून ह़ासिल हो। हां ! अगर वाक़ेई़ कोई दीने इस्लाम की ख़िदमत के लिए ओ़हदा या मन्सब पाने की कोशिश करता है तो वोह लाइक़े तह़सीन है।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज के इस पुर फ़ितन दौर में शहवत जैसी बुरी ख़स्लत को क़ाबू में रखना भी बहुत ज़रूरी है वरना येह बड़े बड़ों को चारों ख़ाने

चित कर देती है और बादशाहों को ग़ुलाम बना देती है। तारीख़ में ऐसे बहुत से वाक़िआत मिलते हैं कि जो लोग बड़े बुज़ुर्ग और वली माने जाते थे उन के साथ शहवत ने वोह गुल खिलाए कि उन की विलायतें छीन ली गईं और वोह कहां से कहां पहुंच गए। आइए ! एक ऐसे शख़्स की इ़ब्रतनाक दास्तान मुलाहज़ा कीजिए जो शहवत के सबब अपनी दुनिया व आख़िरत बरबाद कर बैठा, चुनान्चे

बदनसीब आ़बिद

बनी इसराईल में एक आ़बिद था जिस की दुआ़एं रद नहीं की जाती थीं, लोग अपने मरीज़ों को उस के पास लाते वोह दुआ़ करता तो सेह़तयाब हो जाते। एक मरतबा इ़लाज के लिए बादशाह की लड़की को उस के पास छोड़ दिया गया, वोह उस का इ़लाज करता रहा यहां तक कि शैत़ान ने उस के दिल में बुराई डाली और "न होने का हो गया" और उस ने ख़ौफ़ की वजह से लड़की को क़त्ल कर के दफ़्न कर दिया। शैत़ान इन्सानी शक्ल में बादशाह के पास गया और उसे इस वाक़िए से आगाह कर के क़ब्र के बारे में भी बता दिया, चुनान्चे बादशाह ने ज़मीन खुदवाई तो लाश बरआमद हो गई। अब जब सज़ा के त़ौर पर उस आ़बिद को सूली पर लटकाया जाने लगा तो शैत़ान उस के पास आया और कहने लगा : मैं तुझे इस से नजात दिला सकता हूं लेकिन शर्त येह है कि तू मुझे सज्दा कर। आ़बिद ने शैत़ान को सज्दा किया तो शैत़ान खिलखिला कर हंसा और बोला : मेरा तुझ से कोई तआ़ल्लुक़ नहीं। फिर उस बद नसीब आ़बिद को सूली पर लटका दिया गया। (تنبیہ الغافلین، ص326 ملخصًا)

ग़ौर कीजिए ! शहवत को क़ाबू में न रखने की वजह से बदनीसब आ़बिद अपनी दुनिया व आख़िरत बरबाद कर बैठा। बद क़िस्मती से आज कल ह़ालात इतने ख़राब हो गए हैं कि अगर कोई इस दौर में गुनाह से बचा हुवा है तो शायद इस लिए कि उसे गुनाह करने का मौक़ा नहीं मिला या वोह इस बात से डरता है कि कहीं

बे इ़ज़्ज़ती न हो जाए वरना अगर बिल्कुल खुली छूट मिल जाए तो शायद ही कोई गुनाह से रुक पाए। वैसे जिस त़रह़ आज कल गली कूंचों में खुले आ़म नाच गानों के फ़ंकशन हो रहे हैं ऐसा लगता है कि जैसे गुनाहों की खुली छूट मिल चुकी है। कारों में सफ़र करने वाले गाने सुन कर मस्ती में हिल रहे होते हैं और स्कूटर और साइकिल चलाने वाले गानों की आवाज़ सुन कर अपने सरों को हिलाना शुरूअ़ कर देते हैं। ऐसा नाज़ुक दौर आ गया है कि लड़के और लड़कियां मिल कर नाचते हैं और नाच गानों के ऐसे ऐसे प्रोग्राम मुन्अ़क़िद किए जाते हैं कि उन में जो कुछ होता है उसे अल्फ़ाज़ में बयान करना मुनासिब नहीं। अल्लाह पाक हमारे ह़ाले ज़ार पर रह़म फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

दुनिया की मह़ब्बत पर फ़रेफ़्ता

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दौर बड़ा नाज़ुक है, ख़ुदारा ! अपने आप को संभालो ! जो लोग इज्तिमाआ़त में शिर्कत कर के सुन्नतों भरे बयानात सुनते हैं कम अज़ कम उन्हें समझ जाना चाहिए और शुक्र अदा करना चाहिए कि उन्हें समझाने वाले मौजूद हैं जो पुकार पुकार कर समझाते, क़ुरआनो ह़दीस सुनाते और येह बताते हैं कि जिस त़रफ़ लोग जा रहे हैं वोह हमारा रास्ता नहीं है। याद रखिए ! हमारा रास्ता मदीने का रास्ता है और हमें सिर्फ़ उन्ही बातों को मानना है जिन का हमें प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया है। बद क़िस्मती से मुसलमानों की भारी अक्सरिय्यत गुनाहों में मुलव्वस हो चुकी है और ऐसा लगता है जैसे वोह गुनाहों को दिलो जान से चाहती है। कौन सा घर ऐसा है जहां इस्लाम के प्यारे उसूल अपनाए गए हैं ? कौन सा घर ऐसा है जिस का बच्चा बच्चा नमाज़ी और सुन्नतों का पाबन्द है ? कौन सा घर ऐसा है जिस में रहने वाली तमाम ख़वातीन पर्दा नशीन हैं ? कौन सा घर ऐसा है जिस से मूसीक़ी की सदाएं बुलन्द नहीं होतीं ?

पता चला मुसलमानों की ग़ालिब अक्सरिय्यत गुनाहों को सीने से लगा चुकी है और दुनिया की मह़ब्बत पर फ़रेफ़्ता है। शायद लोग येह समझते हैं कि वोह इस दुनिया में हमेशा रहेंगे ह़ालांकि ऐसा नहीं है। इस दुनिया में न कोई हमेशा रहा है और न रहेगा। बाज़ औक़ात मौत ऐसे अ़जीब अन्दाज़ से आती है कि देखने वाला ह़ैरत का मुजस्समा बन कर देखता रह जाता है जैसा कि

इ़ब्रतनाक मौत

एक शख़्स एक पुल के फ़ुटपाथ पर बा ह़िफ़ाज़त चल रहा था कि इतने में उस के क़रीब से एक ट्राला गुज़रा जिस का टायर झटके से निकला और उस शख़्स को जा लगा जिस के सबब वोह बेचारा उछल कर पुल से नीचे जा गिरा। इसी पर इक्तिफ़ा न हुवा टायर उसे लगने के बाद उछला और पुल के नीचे जहां वोह गिरा था उसे दोबारा जा लगा और यूं बेचारे की हड्डिया टूट फूट गईं और उस ने वहीं दम तोड़ दिया। इस त़रह़ बाज़ औक़ात अच्छा ख़ासा सेह़तमन्द आदमी अचानक मौत का शिकार हो जाता है, चुनान्चे

रेफ़री की अचानक मौत

बहुत पुरानी बात है कि एक अख़बार में येह ख़बर शाएअ़ हुई कि कहीं फ़ुटबॉल का मैच हो रहा था और एक साह़िब रेफ़री बन कर उस मैच की निगरानी कर रहे थे। मैच के दौरान रेफ़री साह़िब को एक दम दिल का दौरा पड़ा, वोह नीचे गिरे और उसी वक़्त उन का हार्ट फ़ेल हो गया। ग़ौर कीजिए ! रेफ़री तन्दुरुस्त और बड़ा ह़ाज़िर दिमाग़ होता है क्यूंकि उसे ही फ़ैसला करना होता है लेकिन बेचारे की लाश को खेल के मैदान से ले जाना पड़ा।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मुख़्तसर सी ज़िन्दगी में इधर उधर के चक्करों में पड़ने के बजाए ऐसे काम कीजिए जो आख़िरत में काम आएं। हमें दुनिया

में जितना रहना है उस के लिए उतनी कोशिश करनी चाहिए और जितना वक़्त क़ब्रो ह़श्र में गुज़ारना है, दुनिया में उस की उतनी ही तय्यारी करनी चाहिए चूंकि क़ियामत का दिन 50 हज़ार साल के बराबर होगा इस लिए दुनिया में उस की ख़ूब तय्यारी करनी होगी। देखिए ! अगर हमें ह़ैदराबाद जाना हो तो हम कोई ख़ास तय्यारी नहीं करते बल्कि जो कपड़े पहने होते हैं उन्ही में चल पड़ते हैं लेकिन जब पंजाब वग़ैरा कहीं दूर जाना हो तो दो तीन सूट और कुछ ज़रूरी चीज़ें भी साथ ले जाते हैं क्यूंकि सफ़र के एतिबार से तय्यारी की जाती है लिहाज़ा जितना अ़र्सा हमें क़ब्र में रहना है उतनी क़ब्र की तय्यारी करनी चाहिए और जितना बड़ा क़ियामत का दिन है उस की भी उतनी तय्यारी करनी चाहिए। जो लोग दुनिया में रह कर आख़िरत की तय्यारी नहीं करते और दुनिया की ग़फ़्लतों और उस की मह़ब्बत में गुम हो जाते हैं उन का अन्जाम बहुत बुरा होता है, चुनान्चे

चार आफ़तें

अल्लाह पाक के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं : जिस ने इस ह़ालत में सुब्ह़ की, कि उस का सब से बड़ा मक़्सद दुनिया हो तो उसे चार ऐसी आफ़तों में मुब्तला कर दिया जाता है जिन से वोह कभी फ़ारिग़ नहीं होता : ﴿1﴾ ऐसा ग़म जो कभी ख़त्म न हो ﴿2﴾ ऐसी मश्ग़ूलिय्यत जिस से फ़राग़त न हो ﴿3﴾ ऐसा फ़क़्र जिस के बाद ख़ुशह़ाली न हो और ﴿4﴾ ऐसी उम्मीद जो कभी पूरी न हो।

(فردوس الاخبار، 2/296، حدیث:6227)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आज कल नमाज़े फ़ज्र के लिए उठता कौन है ? मुसलमानों की अक्सरिय्यत नमाज़ पढ़ती ही कहां है ? सिर्फ़ चार या पांच फ़ीसद मुसलमान नमाज़ पढ़ते होंगे, अगर अक्सरिय्यत पढ़ती तो मसाजिद कम पड़ जातीं। हम जब सुब्ह़ उठते हैं तो हमारी सोच होती है कि आठ या नौ बजे दुकान खोलनी है।

शायद ही कोई ग़ारों या पहाड़ों में हो जो दुनिया से मह़ब्बत न करता हो वरना आज कल लोगों की भारी तादाद दुनिया की मह़ब्बत में खोई हुई है। याद रखिए ! दुनिया की मह़ब्बत से येह मुराद नहीं कि आदमी ह़लाल रोज़ी कमाना छोड़ दे और भीक मांगता फिरे बल्कि इस से मुराद येह है कि हर वक़्त दुनिया कमाने और मालो दौलत बढ़ाने के बारे में सोचता रहे और "दुनिया दुनिया" करता रहे। इसी त़रह़ मां बाप और बाल बच्चों की ख़िदमत के लिए शरीअ़त के दायरे में रहते हुए ब क़दरे ज़रूरत ह़लाल रोज़ी कमाना भी दुनिया की मह़ब्बत में दाख़िल नहीं।

बद क़िस्मती से हम पर दुनिया की मह़ब्बत इतनी ग़ालिब हो चुकी है कि हम दुआ भी दुनिया की बेहतरी के लिए करवाते हैं जैसा कि बहुत से लोग रोज़ी में बरकत के लिए दुआ करने का कहते हैं मगर नेकियों में बरकत से मुतअ़ल्लिक़ दुआ करने का कोई नहीं कहता ! यूंही पढ़ाई में दिल लग जाने के लिए तो बहुत से लोग दुआ करने का कहते हैं लेकिन नमाज़ में दिल लग जाए, इस के मुतअ़ल्लिक़ दुआ करने का कोई कोई कहता है ! येह इस लिए है कि हम पर दुनिया की मह़ब्बत ग़ालिब है। कई बेचारे येह कहते सुनाई देते हैं कि "हमारी फ़ज्र में आंख खुलती है लेकिन हम सुस्ती के सबब फिर से सो जाते हैं" ऐसों को सोचना चाहिए कि अगर पिकनिक पर जाना हो तो ख़ुशी के सबब उन्हें रात भर नींद नहीं आती, इसी त़रह़ अगर ड्यूटी पर जाना हो तब भी सुब्ह़ सवेरे आंख खुल जाती है और किसी क़िस्म की सुस्ती नहीं होती जैसा कि बाज़ कम्पनियों के मुलाज़िमीन का ड्यूटी टाइम सुब्ह़ चार या पांच बजे शुरूअ़ होता है तो सब मुलाज़िमीन सुब्ह़ सुब्ह़ उठ जाते हैं, यूंही अगर बैरूने मुल्क जाने के लिए किसी की फ़्लाइट सुब्ह़ चार या पांच बजे हो तो वोह पूरे टाइम पर एयरपोर्ट पहुंच जाता है क्यूंकि उस ने पैसे ख़र्च किए होते हैं जब कि नमाज़ के लिए पैसे ख़र्च नहीं किए होते इस लिए आंख नहीं खुल पाती।

पहली आफ़त

बहरहाल जिस ने इस हालत में सुब्ह की, कि उस का सब से बड़ा मक़्सद दुनिया हो तो ऐसे शख़्स को चार आफ़तों में मुब्तला किया जाता है जिन में से पहली आफ़त येह है कि "उसे ऐसे ग़म में मुब्तला किया जाता है जिस का कोई मदावा नहीं होता" ज़रा ग़ौर कीजिए ! आज कौन ख़ुश है ? किसी का बाप बीमार है तो किसी की मां, किसी का बच्चा बीमार है तो कोई बे रोज़गार, कोई तंगदस्त है तो कोई क़र्ज़दार, किसी के साथ कुछ मस्अला है तो किसी के साथ कुछ, अलग़रज़ ! लोगों की बड़ी तादाद किसी न किसी ग़म में गिरिफ़्तार है।

दूसरी आफ़त

जो शख़्स इस हालत में सुब्ह करता है कि उस का सब से बड़ा मक़्सद दुनिया हो तो उस पर दूसरी आफ़त येह डाली जाती है कि "वोह ऐसी मश्ग़ूलिय्यत में फंस जाता है जिस से फ़राग़त न हो।" इस लिए आम तौर पर बेचारे सर्मायादार ज़ियादा मसरूफ़ नज़र आते हैं। उमूमन देखा येही गया है कि आशिक़ाने रसूल की दीनी तन्ज़ीम दावते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में ग़रीब ज़ियादा आते हैं जब कि अमीरों को टाइम नहीं मिलता क्यूंकि उन्हें दुकान खुली रखनी होती है, अगर दुकान बन्द हो तो लेन देन का हिसाब करना होता है और फ़ोन पर पार्टियों से राबिता क़ाइम रखना होता है। अगर मालदार बनना हो तो मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा हज़रते उस्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जैसे बनिए कि वोह मालदार होने के बावुजूद प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में हाज़िर रहते, दीन का काम करते और क़हत साली में अपने माल से मुसलमानों की ख़ूब मदद फ़रमाते, चुनान्चे

हज़रते उस्माने ग़नी की शाने सख़ावत

मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा, हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के ज़मानए ख़िलाफ़त में क़हत पड़ा जिस के बाइस लोग बहुत परेशान हुए, हज़रते सिद्दीक़े

अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : आज शाम तक अल्लाह पाक तुम्हारी परेशानी दूर कर देगा, चुनान्चे ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के एक हज़ार ऊंट ग़ल्ले से लदे हुए आए। मदीनए मुनव्वरा के ताजिर ग़ल्ला ख़रीदने के लिए ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पास पहुंचे तो आप ने उन से फ़रमाया : येह बताओ मुल्के शाम से जो ग़ल्ला मेरे पास आया है तुम उस पर किस क़दर नफ़ा दोगे ? ताजिरों ने कहा : दस रूपै के ग़ल्ले पर दो रूपै। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे इस से ज़ियादा मिलता है। ताजिरों ने कहा : जो माल आप ने दस रूपै में ख़रीदा है हम उस की क़ीमत पन्दरह रुपै देंगे। ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मुझे इस से भी ज़ियादा मिल रहा है। ताजिरों ने तअ़ज्जुब से कहा : वोह ज़ियादा देने वाला कौन है ? आप ने फ़रमाया : मुझे एक रूपै के माल की दस रूपै क़ीमत मिल रही है, क्या तुम इस से ज़ियादा दे सकते हो ? ताजिरों ने इन्कार कर दिया, ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : मैं तुम लोगों को गवाह बनाता हूं कि मैं ने येह ग़ल्ला अल्लाह पाक की राह में फ़ुक़राए मदीना को दे दिया। (الریاض النضرۃ، 2/43-44 ملخصًا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ जैसा सर्मायादार शायद ही कहीं हो वरना आज कल येह सोच होती है कि बहुत सा ग़ल्ला (गोदामों में) छुपा कर रख लिया जाए और क़ह़त पड़ने पर महंगा कर के बेचा जाए, भले क़ौम कल भूकी मरती, आज ही मर जाए लेकिन अपनी तिजोरी किसी सूरत ख़ाली नहीं होनी चाहिए। बहरह़ाल दुनिया से मह़ब्बत करने वाले पर ऐसी मसरूफ़ियत डाल दी जाती है कि उसे फ़ुर्सत ही नहीं मिलती और बेचारा इस ह़ाल में मरता है कि

सेठ जी को फ़िक्र थी इक इक के दस दस कीजिए
मौत आ पहुंची कि मिस्टर जान वापस कीजिए

तीसरी आफ़त

जो शख़्स इस ह़ाल में सुब्ह करता है कि उस का सब से बड़ा मक़्सद दुनिया होता है तो उस पर तीसरी आफ़त येह डाली जाती है कि "वोह ऐसी मुफ़्लिसी में फंस जाता है कि कभी मालदार नहीं होता।" शायद आप सोचें कि मुआ़शरे में ऐसे कई अफ़राद हैं जिन्हें सुब्हो शाम माल कमाने की फ़िक्र होती है लेकिन उस के बावुजूद वोह मुफ़्लिस नहीं बल्कि मालदार होते हैं तो याद रखिए ! अस्ल मालदारी येह नहीं कि किसी के पास मालो दौलत की कसरत हो बल्कि अस्ल मालदारी येह है कि बन्दा दिली त़ौर पर मालदार हो। इसी त़रह़ बुज़ुर्गी येह नहीं कि बन्दा उ़म्र के लिह़ाज़ से बड़ा हो जैसा कि हमारे यहां बड़े बूढ़ों को ख़ुशामद के त़ौर पर "बुज़ुर्ग" कहा जाता है ह़ालांकि बहुत से बेचारे बूढ़ों को न तो दुरुस्त त़रीक़े से वुज़ू करना आता है और न ही नमाज़ पढ़नी आती है। इस सिल्सिले में ह़ज़रते शैख़ सअ़दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने बड़ी प्यारी बात इरशाद फ़रमाई है :

بُزُرگی بہ عقل اَست نہ بہ سال　　تَوَنگری بہ دل اَست نہ بہ مال

यानी बुज़ुर्गी अ़क़्ल से है न कि उ़म्र के लिह़ाज़ से, मालदारी दिल से है न कि मालो दौलत से। (गुलिस्ताने सअ़दी, स. 20 मुलख़्ख़सन)

मालदार होने के बावुजूद मुफ़्लिस

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स दिली त़ौर पर मालदार नहीं वोह ब ज़ाहिर कितना ही मालदार हो मुफ़्लिस ही होता है, ऐसे शख़्स को माल की हवस ज़ियादा होती है, वोह अपना माल बढ़ाने के लिए प्राइज़ बॉन्ड्ज़ की गड्डियां जमा कर के रखता है, उस का अपने मुल्क में कारोबार करने से पेट नहीं भरता तो दीगर ममालिक का रुख़ करता है और यूं दुनिया भर में कारोबार फैला देता है लेकिन अफ़सोस ! दुनियवी मसरूफ़ियत की वजह से वोह दीन के लिए वक़्त नहीं निकाल

पाता। याद रखिए ! जिस में दुनियवी मालो दौलत की हवस न हो और वोह रात को खाना खा कर इत्मीनान से सो जाता हो वोही सब से बड़ा मालदार है। वोह बेचारा क्या मालदार है जिसे न दिन में आराम मिलता है न रात में, अगर रात को थक हार कर सोता है तो अचानक फ़ोन की घंटी बजने से उठ जाता है। कुछ लोग ब ज़ाहिर मालदार नहीं होते लेकिन दिल के ग़नी होते हैं कि जब वोह अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ राहे ख़ुदा में अपना थोड़ा सा माल ख़र्च करते हैं तो अल्लाह पाक की रह़मत से उन का थोड़ा सा ख़र्च किया हुवा माल बहुत सारे माल से सब्क़त ले जाता है, चुनान्चे

एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ गया

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ गया, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُم को बड़ा तअ़ज्जुब हुवा कि किस त़रह़ एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ गया ? तो आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : एक शख़्स के पास कसीर माल था उस ने अपने माल में से एक लाख दिरहम ख़ैरात किए और दूसरे के पास दो ही दिरहम थे उस ने उन में से एक राहे ख़ुदा में दे दिया। (نسائی، ص415، حدیث:2525)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! एक दिरहम एक लाख दिरहम से इस लिए बढ़ गया कि वोह एक दिरहम उस शख़्स का आधा माल था गोया उस ने अपना आधा माल राहे ख़ुदा में सदक़ा कर दिया जबकि उस के बरअ़क्स जिस शख़्स ने एक लाख दिरहम सदक़ा किया वोह उस के कसीर मालो दौलत में से आधा नहीं सिर्फ़ एक ह़िस्सा था, गोया उस ने अपने आधे माल से भी कम सदक़ा किया, यूं एक दिरहम एक लाख दिरहम से बढ़ गया।

मुसलमानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه का मश्हूर वाक़िआ़ भी है कि आप ने सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में

अपना आधा माल हाज़िर किया जबकि ख़लीफ़ए अव्वल हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अपना पूरा माल पेश किया। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ उमर ! कितना माल यहां लाए हो और किस क़दर घरवालों के लिए छोड़ा है ? अर्ज़ की : हुज़ूर ! आधा लाया हूं और आधा घरवालों के लिए रख आया हूं। फिर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से येही सुवाल किया तो उन्हों ने अर्ज़ की : मैं सारा माल ही उठा लाया हूं और घरवालों को अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़िम्मए करम पर छोड़ आया हूं।

(ترمذی، 5/380، حدیث:3695)

किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस सिद्दीक़ के लिए है ख़ुदा और रसूल बस

हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का आधा माल हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के पूरे माल से कहीं ज़ियादा था लेकिन पूरा माल नहीं था जब कि हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जो माल पेश किया वोह हज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के आधे माल के मुक़ाबले में था तो कम लेकिन चूंकि घर का पूरा माल था इस लिए हज़रते सिद्दीक़े अकबर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ, हज़रते फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से सब्क़त ले गए।

कभी मालदार न होने वाला शख़्स

जो शख़्स माल की महब्बत में गिरिफ़्तार हो वोह बेचारा कभी मालदार नहीं होता और हर वक़्त माल के चक्कर में फंसा रहता है। जिस तरह कोल्हू के बैल की कोई मन्ज़िल नहीं होती, बेचारा हर वक़्त एक दायरे में चक्कर लगाता रहता है, इसी तरह दुनिया की महब्बत में गिरिफ़्तार शख़्स की भी कोई मन्ज़िल नहीं होती ! वोह बेचारा भी बस माल बढ़ाने की कोशिश में लगा रहता है यहां तक कि उस की मौत वाक़ेअ हो जाती है। क़ुरआने पाक में इसी तरफ़ तवज्जोह दिलाई गई है,

चुनान्चे पारह 30 सूरए तकासुर की आयत 1 और 2 में इरशाद होता है : ﴿اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ﴿۱﴾ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ؕ﴿۲﴾﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा त़लबी ने यहां तक कि तुम ने क़ब्रों का मुंह देखा।

चौथी आफ़त

जो शख़्स इस ह़ाल में सुब्ह करता है कि उस का सब से बड़ा मक़्सद दुनिया हो तो उस पर चौथी आफ़त येह डाली जाती है कि "वोह ऐसी उम्मीद में फंस जाता है जो कभी पूरी नहीं होती"

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बहुत से लोगों ने येह जुम्ला कई बार सुना होगा कि "उम्मीद पर दुनिया क़ाइम है।" जब किसी को आख़िरत की तय्यारी के ह़वाले से समझाया जाए और मौत याद दिलाई जाए तो जवाब मिलता है "उम्मीद पर दुनिया क़ाइम है" बस फिर येह सोच कर बन्दा दुनिया कमाने में ऐसा मश्ग़ूल होता है कि उस की उम्मीदें ही ख़त्म नहीं होतीं, एक प्रोजेक्ट अभी अधूरा होता है उसी दौरान दूसरा शुरूअ़ हो जाता है, एक दुकान संभाली नहीं जाती कि इतने में दूसरी खोल कर उस पर मुलाज़िम रख दिया जाता है और फिर आज के इस गए गुज़रे दौर में कौन किसी को कमा कर देता है ? बिल आख़िर एक दिन अख़बार में ख़बर छपती है कि फ़ुलां दुकान का मुलाज़िम माल समेट कर भाग गया। बहरह़ाल अभी ज़िन्दगी की उम्मीदें पूरी नहीं होतीं कि मौत आ कर क़िस्सा तमाम कर जाती है। ऐ काश ! दुनिया की बेजा मह़ब्बत हमारे दिलों से निकल जाए और अल्लाह पाक और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची मह़ब्बत हमारे दिलों में रासिख़ (यानी पुख़्ता) हो जाए। اٰمین بِجاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ऐ दुनिया की मह़ब्बत में गिरिफ़्तार रहने वालो ! ऐ दुनिया की ख़ातिर ज़मीर बेच डालने वालो ! ऐ दुनिया ही को सब कुछ समझने वालो ! ऐ हर वक़्त बैंक बैलेन्स

बढ़ाने की फ़िक्र में बदमस्त रहने वालो ! तुम्हारे लिए लम्हए फ़िक्रिया है कि क़ुरआने पाक की सूरए हुमज़ह में इरशाद होता है :

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ الَّذِیۡ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ۙ﴿۲﴾ يَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ ۚ﴿۳﴾ كَلَّا لَيُنۡۢبَذَنَّ فِی الۡحُطَمَةِ ۫ۖ﴿۴﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰىكَ مَا الۡحُطَمَةُ ؕ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ ۙ﴿۶﴾ الَّتِیۡ تَطَّلِعُ عَلَى الۡاَفۡـِٕدَةِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّهَا عَلَيۡهِمۡ مُّؤۡصَدَةٌ ۙ﴿۸﴾ فِیۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾ (پ30، الھمزۃ:1تا9)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ख़राबी है उस के लिए जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या येह समझता है कि उस का माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा और तू ने क्या जाना क्या रौंदने वाली अल्लाह की आग कि भड़क रही है वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी बेशक वोह उन पर बन्द कर दी जाएगी लम्बे लम्बे सुतूनों में।

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क़ुरआने पाक की इन आयाते मुबारका से दर्से इब्रत हासिल कीजिए ! अल्लाह पाक "चुग़ल ख़ोरों, ग़ीबत करने वालों और गिन गिन कर नोटें रखने वालों" को तम्बीह फ़रमा रहा है। बहुत से लोग अपनी ज़िन्दगी इस त़रह़ गुज़ारते हैं कि जैसे उन्हें मरना ही नहीं, जवान भी और 80, 90 साल का बूढ़ा भी अपनी आख़िरत को फ़रामोश किए टीवी के सामने बैठ कर फ़िल्में ड्रामे देख रहा होता है, दाढ़ी मुन्डा रहा होता है, गालियां बक रहा होता है, जो मर्ज़ी में आता है करता चला जाता है और हर वक़्त उस पर बस एक ही धुन सुवार होती है कि कहीं से माल हाथ आ जाए। याद रखिए ! क़ुरआने पाक हमें ख़बरदार कर रहा है कि अभी संभल जाओ वरना बाद में सिवाए अफ़सोस के कुछ हाथ न आएगा। ऐ काश ! हम अपनी ज़िन्दगी इस्लाम के रौशन उसूलों पर गुज़ारें और सुन्नतों के आईनादार बन जाएं। اٰمِين بِجاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صلّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

अगले हफ़्ते का रिसाला

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025